फरीदाबाद
# मजदूर समाचार
राहें तलाशने - बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया
नई सीरीज नम्बर 155 मई 2001

**कहत कबीर**

**रुपये-पैसे की आवश्यकता जितनी ज्यादा घटायेंगे.... ....उतनी ही अपने लिये जगह बढायेंगे।**

# पाणी... पाणी... प्राणी पुराण

फरीदाबाद - बल्लभगढ औद्योगिक क्षेत्र में भूतल जल पीने लायक नहीं रहा है। कारखानों के तेल - तेजाब - रसायनों ने पचास वर्षों में लाखों वर्ष से भूगर्भ में संचित शुद्ध जल को प्रदूषित कर दिया है। कारखानों और उनके इर्द - गिर्द बसी आबादी की पानी की जरूरतों ने इन पचास वर्षों में जमीन के अन्दर जल - स्तर को बहुत नीचे भी पहुँचा दिया है। यमुना नदी की ओर बढते ट्युबवैलों के कदम रफ्तार पकड़ रहे हैं.....

और ..... वर्ष के 365 दिन सुबह - सवेरे, देर रात, दोपहर .... नलकों पर बाल्टियों - कैनों की कतारें.... साइकिलों पर तबला बनती 40 लीटर की खाली कैनें.... भरी कैनों के संग साइकिल को बैलनुमा खींचते... दो नम्बर, डबुआ कालोनी, सारण, जवाहर कालोनी, संजय कालोनी, मुजेसर, चावला कालोनी, सीही, अजरोन्दा, भूड़ कालोनी, सराय ख्वाजा आदि कालोनियों - "गाँवों" के हूबहू नजारे फरीदाबाद - भर में फैली झुग्गी बस्तियों में। पानी की जरूरत को पूरा करने के प्रयास हम में से अधिकतर को हर रोज पानी - पानी करते हैं। बरसात में नाली - सीवर के पानी में चलना ईश्वर याद दिलाये या न दिलाये पर गर्मियों में पानी भरना काफिर को खुदा याद दिला देता है।

हाँ, फिकरे का इस्तेमाल करें तो साहबों की बात ही कुछ और है।

उपरोक्त फरीदाबाद की विशेषता नहीं हैं। फरीदाबाद तो मात्र एक उदाहरण है।

– बम्बई को मुम्बई कहना शुरू करने से वहाँ होती तेजाबी बारिश पर कोई असर नहीं पड़ा है। हाँ, तेजाबी बारिश इस कदर सामान्य होती जा रही है कि यह खबर नहीं रही।

–हिमालय में नन्दा देवी पर्वत शिखर पर लगाये आणविक संयन्त्र बर्फीले तूफान में खो गये। एवरेस्ट चढे एडमन्ड हिलेरी के नेतृत्व में सागर से शिखर वाला फौजी अभियान आणविक संयन्त्र का अता - पता नहीं लगा पाया। कवच टूटा तो तीन हजार वर्ष तक गँगा का पानी आणविक विकीर्णो से प्रदूषित रहेगा।

– कवच टूटने पर चेरनोबिल खबर बना था पर दुनियाँ - भर में भूतल जल और नदियों को ही नहीं बल्कि समुद्रों तक को आणविक संयन्त्रों के रिसाव और उनका कचरा सामान्य तौर पर एटमी विकीर्णो से प्रदूषित कर रहे हैं। किसी रसायन से प्रदूषित जल पीढी - दो पीढी के लिये हानिकारक है जबकि आणविक विकीर्णो से प्रदूषित पानी हजारों वर्ष तक प्राणियों के लिये जानलेवा है।

– पाकिस्तान के क्वेटा क्षेत्र में खेतों में लगे हजारों ट्युबवैलों ने इस कदर जमीन से पानी खींचा है कि सब सूखने की कगार पर हैं। मण्डी के लिये कृषि उत्पादन दुनियाँ - भर के देहातों में जल के साथ वैसा ही खिलवाड़ कर रहा है जैसा शहर व कारखाने।

– दुनियाँ के कोने - कोने में समुद्री तूफानों से बढती तबाही लक्षण है। यह लक्षण है पृथ्वी के तापमान में हो रही वृद्धि का। वर्तमान व्यवस्था की सामान्य गतिविधियाँ पृथ्वी का तापमान बढा रही हैं। आने वाले दिनों में समुद्री तूफानों की बढती विनाशलीला के संग - संग ध्रुवों पर बर्फ पिघलने से विशाल भू - भाग जलमग्न होने के खतरे मँडरा रहे हैं। इंग्लैण्ड, अमरीका, आस्ट्रेलिया, बंगलादेश, उड़ीसा, आन्ध्र के तटों पर समुद्री तूफानों से हुई तबाही पूर्व - सूचना है।

– घनी आबादी, दिल्ली जैसी एक करोड़ की आबादी बिना किन्हीं कारखानों के भी हर यमुना को गन्दा नाला बना देगी। अमरीका के एक महानगर, लॉस एंजेल्स में मल संशोधन संयन्त्र के ब्रेक - डाउन ने समुद्र की खाड़ी को मानव - मल से लबालब कर दिया था – महानगर का दबाव इस कदर है कि मल संशोधन संयन्त्र हर समय ब्रेक - डाउन के कगार पर रहता है। दिल्ली जैसे शहरों के भूतल जल के स्तर और उसके प्रदूषण की मात्रा का तो जिक्र ही क्या। बोतल - बन्द पानी चल गया है और वर्तमान व्यवस्था के चलते बोतल - बन्द हवा का प्रचलन दूर नहीं है लेकिन पत्तों - टहनियों पर तलवार भाँजता कोई सर्वोच्च न्यायालय प्रदूषण की एक जड़, नगरों - महानगरों के उन्मूलन के लिये भृकुटी तक नहीं तानेगा।

## प्यासी हैं रूहें

दरअसल, तन की प्यास तो जस - तस हम आज भी बुझा लेते हैं पर असल प्यासी तो हमारी आत्मायें हैं।

आपसी तालमेलों व परस्पर आदर - सम्मान वाले सतयुग के स्थान पर उभरी होड़ व ऊँच - नीच वाली समाज व्यवस्थाओं में मन की प्यास बढने लगी। आत्मीय रिश्तों की, प्यासी रूहों की पूर्ति तन की हवस और शानों - शौकत में, स्मारकों में ढूँढी गई।

इस सिलसिले में इन्सान का इन्सान के प्रति व्यवहार आमतौर पर इतना खराब होता आया है कि इन्सानियत की बढती कमी का अहसास पीढी - दर - पीढी रहा है। पशु - पक्षियों, जीव - जन्तुओं के प्रति हमारी भावनायें बढती निर्ममता और करुणा के बीच डगमग रही हैं। रात की नीरवता, भोर की लाली, नीले आसमान का भूलना/ याद आना फैलते खालीपन की कसक लिये है। पीड़ा की प्रगति, पीड़ा का विकास.....

## पाणी....प्राणी

कहते हैं: जल से जीवन है। यह भी कह सकते हैं: व्यापक स्तर पर प्रदूषित व उद्वेलित - उत्तेजित जल और बोतल - बन्द पानी वर्तमान व्यवस्था में व्यापक जनता की पीड़ा व उत्तेजना और चन्द लोगों के उज्जवल संकुचित जीवन को प्रतिबिम्बित करते हैं।

बोतल - बन्द जीवन इतना संकुचित है कि इसमें सफलता सैंकड़ों अथवा हजारों अथवा लाखों या फिर करोड़ों प्राणियों की दुर्गत करने के पैमाने द्वारा आँकी जाती है, मुस्कुराते हुये विनाश करने से नापी जाती है। लेकिन .... लेकिन हम में से अधिकतर के लिये सफलता का मायना बोतल - बन्द पानी पीने वालों की श्रेणी में शामिल होना है। और, हमारी इच्छायें, आकांक्षायें, प्रयास वर्तमान व्यवस्था का खाद - पानी बनते हैं। दुर्गत की जननी को कन्धा देना.....

जाहिर है, सफल जीवन के नये पैमाने की जरूरत है। तन की आवश्यकताओं की पूर्ति के संग मन की जरूरतें पूरी करना सफलता के पैमाने में अनिवार्यता लगते हैं। ■

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद–121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

# और बातें यह भी

**आटोलैम्प मजदूर** : " वेतन देने का अजीब तरीका अपनाया है। सात तारीख को 10 मजदूरों को वेतन दे कर हस्ताक्षर करवा लेते हैं और बाकी को 500-400 रुपये की किश्तों में 20 दिन में जा कर वेतन देते हैं।"

**अमेटीप मशीन टूल्स वरकर** : " क्या कहें ? तनखा के लिये एप्लीकेशन दो ! मार्च का वेतन 10 अप्रेल को 10 लोगों का दरखास्त देने के बाद दिया। शादी वगैरा के आवेदन पर 11 अप्रेल को 15 लोगों को मार्च की तनखा दी। बाकी हम सब पैसे के इन्तजार में हैं।"

**ओरियन्ट फैन मजदूर** : " फैक्ट्री कलकत्ता थी तब ठेकेदार के खाते में नाम था और फरीदाबाद आई तब यहाँ भी ठेकेदार के खाते में ही नाम। लगता है कि ठेकेदार के खाते में नाम पर ही अपना सूर्य अस्त होगा।"

**ट्रेक्टल टिरफोर वरकर** : "कम्पनी बीमार है, बी.आई.एफ. आर. की देखरेख में है कह कर मैनेजमेन्ट वर्दी- जूते नहीं दे रही और वार्षिक टूर बन्द कर दिया है।"

**हैमर फोर्ज मजदूर** : " प्लॉट 28 सैक्टर-4 में बरसों से काम कर रहे वरकरों ने ई.एस.आई. कार्ड माँगे तो मैनेजमेन्ट ने उन्हें नौकरी से निकाल दिया।"

**फ्रिक इण्डिया वरकर** : " प्रोविडेन्ट फण्ड में हेरा-फेरी करते हैं – कभी कम काटते हैं, कभी ज्यादा और पूछने पर बताते नहीं कि ऐसा क्यों करते हैं।"

**सनफ्लैग इन्डस्ट्रीज मजदूर** : " नियम-कानूनों वाली कुछ राहत के लिये हम ने एक यूनियन का पल्लू पकड़ा। तीन साल वाली मैनेजमेन्ट- यूनियन एग्रीमेन्ट हुई। सब वरकरों को वर्दी देने की बात एग्रीमेन्ट में थी पर मैनेजमेन्ट ने चन्द लोगों को ही वर्दी दी और बाकी को मना कर दिया। दो ग्रुप बना कर मैनेजमेन्ट ने हमारे लिये नौकरी करना मुश्किल कर दिया है और यूनियन वाले दूर से सलाहकार बने हुये हैं।"

**भास्कर रिफ्रेक्ट्रीज वरकर** : " कम्पनी ने ऐसा तरीका अपना रखा है कि बीस साल की नौकरी वालों को भी सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन दिया जाता है। डी.ए. आने के बाद भी महीनों नहीं लगाते और एरियर तो देते ही नहीं। उत्पादन डबल कर दिया है, वर्क लोड दुगना – पहले दो आदमी एक गाड़ी खाली करते थे तब एक हाजरी लगती थी, अब एक आदमी एक गाड़ी खाली करता है तब एक हाजरी लगती है। और, तनखा हर महीने देरी से – मार्च का वेतन हमें आज 17 अप्रेल तक नहीं दिया है।"

**वर्कशॉप वरकर** : "रचना सिनेमा के पास आटो इन्टरप्राइजेज में हम 12 मजदूर काम करते हैं। वेतन 1100-1200 रुपये से शुरू करते हैं और कहीं छोड़ कर न चले जायें इसलिये डेढ महीने का वेतन हर समय रोके रहते हैं। गाली-गलौज आम बात है और ड्युटी के लिये घर से बुला लेते हैं।"

**के.जी. खोसला कम्प्रेसर मजदूर** : " हर वरकर से इस्तीफा ले लिया पर फैक्ट्री बन्द नहीं हुई, चल रही है। वी आर एस के जरिये निकाले हम पुराने वरकरों को मैनेजमेन्ट ने ठेकेदारों के जरिये फिर काम पर रख लिया है। पूना प्लान्ट में मजदूर वी आर एस के फेर में नहीं आये, वहाँ के कुछ मजदूरों को यहाँ ट्रान्सफर कर दिया है।"

**सुपर ऑयल सील वरकर** : " हमें जनवरी का वेतन 8 अप्रेल को देना शुरू किया और स्टाफ को अभी दिसम्बर की तनखा भी नहीं दी है। रिटायर होने के 6 महीने बाद भी हिसाब नहीं दे रहे – कहते हैं कि जहाँ जाना है जाओ, पैसे नहीं हैं।"

# कानून-कानून-कानून......

**कॉमेट हाइड्रोलिक मजदूर** : " कैजुअलों को 1400 रुपये वेतन देते हैं। ओवर टाइम पेमेन्ट सिंगल रेट से। ई.एस.आई. कार्ड किसी को दिया है और किसी को नहीं।"

**रेनसन इण्डिया वरकर** : " प्लॉट 9 सैक्टर 27 बी स्थित फैक्ट्री में हम 300-400 मजदूर काम करते हैं। हैल्परों से रोज दस घण्टे ड्युटी करवाते हैं और महीने के 1300 रुपये देते हैं। मार्च का वेतन आज 14 अप्रेल तक हमें नहीं दिया है।"

**चाँद इन्डस्ट्रीज मजदूर** : " टाउन में 7 बी 1 स्थित फैक्ट्री से हर महीने 20-30 लाख रुपये की सेल है लेकिन हमें तनखा ढाई महीने बाद देते हैं – कहते हैं कि घाटा हो रहा है। बोनस नहीं देते, हम बोनस माँगते हैं तो कहते हैं कि पैसे नहीं हैं।"

**ए-टॉप वरकर** : " प्लॉट 24 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में हम 100-125 मजदूर काम करते हैं। आधों को ई.एस.आई. कार्ड नहीं दिये हैं, न पी.एफ. की पर्ची। हर रोज 2 घण्टे ओवर टाइम करवाते हैं पर पेमेन्ट सिंगल रेट से।"

**नेहरा मैटल मजदूर** : " प्लॉट 108 सैक्टर-59 स्थित फैक्ट्री में हम 40 वरकर काम करते हैं। हम में कोई परमानेन्ट नहीं है। हैल्परों को 1400-1500 रुपये महीना देते हैं। रोज ओवर टाइम करवाते हैं, पेमेन्ट सिंगल रेट से। मार्च का वेतन हमें आज 14 अप्रेल तक नहीं दिया है।"

**नूकेम वरकर** : " आजकल नूकेम मशीन टूल्स में काम का जोर है, ओवर टाइम लग रहा है। लेकिन मैनेजमेन्ट ने दिसम्बर, जनवरी, फरवरी और मार्च की तनखायें हमें आज 10 अप्रेल तक नहीं दी हैं।"

**बोनी आटोमोटिव्ज मजदूर** : " रोज 12 घण्टे काम करवाते हैं। ओवर टाइम के लिय जबरन रोकते हैं और पेमेन्ट सिंगल रेट से देते हैं।"

**खेमका कन्टेनर्स वरकर** : " सैक्टर-24 में दो जगह काम होता है, प्लॉट 38 और 76 में – 38 वाली फैक्ट्री के गेट पर तो नाम भी नहीं है। परमानेन्ट 50 और कैजुअल 100 हैं। हैल्परों को 1300 रुपये महीना वेतन देते हैं। ओवर टाइम जबरदस्ती करवाते हैं जिसकी पेमेन्ट सिंगल के भी आधा के हिसाब से देते हैं।"

**सिफ्टर इन्टरनेशनल मजदूर** : " प्लॉट 83 सैक्टर-6 में हम 50-60 वरकर काम करते हैं। फरवरी और मार्च की तनखायें हमें आज 19 अप्रेल तक नहीं दी हैं।"

**बेलमैक्स इन्डस्ट्रीज वरकर** : " 24 सैक्टर प्लान्ट में नये हैल्परों को 1200 रुपये महीना देते हैं। 5-6 साल से लगातार काम कर रहों को भी कैजुअल कहते हैं और इन 'पुराने' कैजुअलों को 1400 रुपये महीना देते हैं। पुराने कैजुअलों को साल में एक जोड़ी वर्दी अवश्य देते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते। शीट मैटल का काम है, चोटें लगती रहती हैं। इलाज प्रायवेट में करवाना पड़ता है और मैनेजमेन्ट पहले बिल माँगती है, फिर पैसे देती है।"

**इन्जेक्टो मजदूर** : " मार्च का वेतन आज 19 अप्रेल तक हमें नहीं दिया है।"

**खन्ना इन्डस्ट्रीज वरकर** : " ओरियन्ट फैन का कॉटेज है और हम 150 मजदूर काम करते हैं। ई.एस.आई. कार्ड किसी को नहीं दिया है और वेतन मात्र 1500 रुपये महीना देते हैं।"

**शरद मैटल मजदूर** : " ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को 1200 रुपये महीना देते हैं।"

**अरिहन्त इंजिनियरिंग वरकर** : " महीने का वेतन 1100 से 1500 से 3500 रुपये है। प्रोविडेन्ट फण्ड की पर्ची किसी को नहीं दी है। थोड़ी चोट लगने पर ई.एस.आई. की कच्ची पर्ची बना देते हैं और ज्यादा चोट लगने पर नौकरी से निकाल देते हैं।"

**गिरीसन टूल्स मजदूर** : " 23 सैक्टर के पास है। सौ के लगभग वरकर काम करते हैं – निकालते, भर्ती करते रहते हैं। वेतन 1325 से 1800 रुपये महीना। हर रोज 12 घण्टे ड्युटी है और ओवर टाइम पेमेन्ट सिंगल रेट से कुछ ज्यादा देते हैं। चोट लगने पर दवाई के पैसे नहीं देते। एक्सीडेन्ट होने के बाद ही ई.एस.आई. कार्ड बनवाते हैं।"

**माइक्रो टूल्स वरकर** : " हैल्परों को 1000-1200 रुपये महीना देते हैं। ई.एस. आई. कार्ड नहीं दिये हैं।"

**हैदराबाद इन्डस्ट्रीज मजदूर** : " ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों के वेतन में से प्रोविडेन्ट फण्ड के पैसे काट लिये जाते हैं पर मजदूरों के पी.एफ. खाते में पैसे जमा नहीं करवाये जा रहे। कैन्टीन वरकरों को फरवरी और मार्च की तनखायें आज 19 अप्रेल तक नहीं दी गई हैं।"

# कुछ फुरसत में हुई बातें

**टेकमसेह मजदूर :** " 31 प्रतिशत वर्क लोड वृद्धि वाली एग्रीमेन्ट के बाद मैनेजमेन्ट ने तालाबन्दी के जरिये 500 मजदूरों को नौकरी से निकाला और अब उत्पादन 55 प्रतिशत बढाने की कह कर वर्क लोड में 100 फीसदी वृद्धि करने में जुटी है। चीफ एग्जेक्युटिव अति कर रहा है : मशीन शॉप में क्रैन्क शॉफ्ट का उत्पादन 575 की जगह 1000 के लिये 23 अप्रेल को शिफ्ट समाप्ति पर दो मजदूरों को अपनी केबिन में ले गया और डेढ घण्टे तक धमकियाँ देता रहा। बात फैलने, एतराज बढने पर साहब ने तालाबन्दी की धमकी दी, 25 अप्रेल को मैनेजमेन्ट ने एक लीडर को आरोप-पत्र दिया। इससे पहले पुराने को निकाल नया जनरल मैनेजर मैनेजमेन्ट लाई : गेट-पास बन्द, छुट्टी में और अड़चनें, लन्च में फैक्ट्री गेट बन्द, परेशान करने के लिये ट्रान्सफर फिर शुरू, डॉक्टर-सेफ्टी मैनेजर-सेक्युरिटी मैनेजर आदि को भी उत्पादन के सुपरविजन में लगा कई-कई मैनेजर हर समय हमारे सिर पर सवार .... लेकिन मैनेजमेन्ट की सब दादागिरी के बावजूद उत्पादन नहीं बढ रहा।

**" विक्रमी सम्वत् के नव वर्ष के अवसर पर खूब मजा आया। झँडियाँ-बैनर टाँग, हवन करवा हमें संस्कार-संस्कृति देते हैं। गेट पर तम्बू-कनातें लगी थी और हवन के समय चीफ एग्जेक्युटिव , यूनियन लीडर तथा कुछ मजदूर थे। इस बार का पुजारी वी आर एस के तहत नौकरी से बाहर हुआ टेकमसेह मजदूर था। पुजारी जी ने प्रवचन में कम्प्युटरों और विदेशी कम्पनियों की आलोचना की .... चीफ एग्जेक्युटिव उठ कर चला गया और गेट बन्द करवा दिया। लन्च के समय वरकरों को विक्रमी सम्वत् के कार्यक्रम में शामिल नहीं होने दिया।**

" उत्पादन के लिये साइकल टाइम सैकेन्डों में निर्धारित करने वाली टेकमसेह ने नोटिस लगाया है कि जनवरी से मार्च के 3 महीनों में 7 करोड़ रुपये का घाटा हुआ है।"

**एस.पी.एल. वरकर :** " रोज 12 घण्टे काम करना पड़ता है। प्रोविडेन्ट फण्ड और ई.एस.आई. के लिये कम्पनी के हिस्से वाले पैसे भी हम मजदूरों के वेतन में से काट लेते हैं। ओवर टाइम की पेमेन्ट डबल की बजाय सिंगल रेट से तो बनाते ही हैं, उसमें से भी कम्पनी के हिस्से वाले ई.एस.आई व पी.एफ. के पैसे तक काट लेते हैं। हर 6 महीने में ब्रेक कर नये सिरे से भर्ती करते रहते हैं। पैसे तीन गुणा काटते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते। निकालने के बाद प्रोविडेन्ट फण्ड फार्म भरने के लिये चक्कर कटवाने के बाद कहते हैं कि ऊपर से आदेश है कि फार्म नहीं भरना। प्रोविडेन्ट फण्ड दो गुणा काटते हैं और हमें मिलता एक पैसा नही ! ई.एस.आई. अधिकारी , पी.एफ. अधिकारी और कम्पनी अधिकारी मिल कर हमें लूट रहे हैं।

" ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को एस.पी.एल. में मार्च की तनखा 12 अप्रेल को देनी शुरू की और आधों को आज 18 अप्रेल तक नहीं दी है।"

**कॉन्टिनेन्टल कन्स्ट्रक्शन मजदूर :** " कम्पनी पन बिजली प्रोजेक्टों के ठेके लेती है। प्रोजेक्ट साइटों पर काम करने के लिये यहाँ मथुरा रोड़ स्थित सेन्ट्रल वर्कशॉप में भर्ती करते हैं। उच्च कुशल कारीगरों की जरूरत रहती है — वैल्डिंग के एक्स-रे टैस्ट में सफल को साइट पर भेजते हैं। उच्च कुशल श्रमिकों से भी भर्ती से पहले कोरे कागजों पर हस्ताक्षर करवाने की कोशिश करते हैं। प्रोविडेन्ट फण्ड का और ई.एस.आई. का कम्पनी वाला हिस्सा भी हम मजदूरों की तनखा में से काटते हैं।

**" हिमाचल में प्रोजेक्ट की एक पूरी साइट भारी बरसात से अचानक उमड़े पानी में बह गई। दो सौ लोग बह गये पर कम्पनी 108 बताती है। कई मृत मजदूरों की पत्नियाँ फैक्ट्री गेट पर आती हैं — किसी को कहते हैं उसका पति नौकरी छोड़ गया और किसी को यह कि उसका पति घर की कह कर छुट्टी ले कर गया था। सौ के करीब मृत मजदूरों के परिवारजनों को कम्पनी ने कोई राहत नहीं दी है।"**

**ओखला में फैक्ट्री गेट पर वरकर :** " बी 263 ओखला फेज 1 स्थित **सूरी सन्स** में कोरे कागज पर दस्तखत करवाते थे और दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन नहीं देते थे। डेढ साल पहले एक यूनियन के जरिये हम ने श्रम आयुक्त को शिकायत की। तारीखों पर यूनियन और मैनेजमेन्ट जाते रहे। मैनेजमेन्ट ने एक की जगह 4 कम्पनी बताई और 20 की जगह 5 मजदूर बताये लेकिन माँगने पर रिकार्ड पेश नहीं किया। इधर मार्च का वेतन हमें नहीं दिया और 11 अप्रेल को फैक्ट्री के ताला लगा दिया। श्रम विभाग में तारीखों के सिलसिले में 11 अप्रेल की ही तारीख थी जिसके बाद 23 अप्रेल की पड़ी और अब 17 मई की तारीख है।"

**आर.बी. इन्डस्ट्रीज मजदूर :** " प्लॉट 159 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में 2 शिफ्ट हैं। दिन वाली शिफ्ट 10 घण्टे की और रात वाली 12 घण्टे की। दो घण्टे मशीनों को रैस्ट देते हैं — मशीन फुँक जायेगी, ढाई लाख की आती है! हैल्परों को 1200-1300-1400 रुपये महीना देते हैं — हरियाणा ग्रेड माँगने पर कहते हैं कि ग्रेड यहाँ धरती पर नहीं मिलता, ऊपर आसमान में मिलता है। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से देते हैं और जबरन करवाते हैं — गेट पर रोक लेते हैं, फिर भी नहीं रुको तो कहते हैं कि अगले दिन से मत आना। निकालने के बाद कम से कम दस चक्कर कटवाने के बाद पैसे देते हैं और वह भी पूरे नहीं — आर.बी.आई. की भाषा में हम कहते हैं कि ब्याज काट कर पैसे देते हैं। महीने में दो-तीन हाजरी और ओवर टाइम के दस-बीस घण्टे वैसे ही खा जाते हैं। 25 सैक्टर स्थित फैक्ट्री में काम करने वाले वरकर के कागज संजय मेमोरियल स्थित फैक्ट्री के बनाते हैं। कोरे कागजों पर तो पता नहीं कहाँ-कहाँ हस्ताक्षर करवाते हैं।"

**एजिको कन्ट्रोल वरकर :** " 20 ए/8 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में हम बहुत परेशान हैं। तनखा 7 से पहले की बजाय 20-25 तारीख को देते हैं। कानून तो डबल रेट का है पर सिंगल रेट से भी ओवर टाइम के 10 रुपये प्रति घण्टा बनते हैं लेकिन यहाँ 4 रुपये घण्टा का फरमान जारी किया हुआ है। और, मई 2000 से करवाये ओवर टाइम के पैसे 4 रुपये घण्टा के हिसाब से भी मैनेजमेन्ट ने अप्रेल 2001 तक नहीं दिये हैं — माँगने पर बड़े साहब उलटा बोलते हैं। जून 96 से हमारी तनखा से प्रोविडेन्ट फण्ड के नाम से पैसे काट रहे हैं पर आज तक हमें कोई फण्ड स्लिप नहीं मिली है — पता नहीं फण्ड जमा करवा भी रहे हैं कि नहीं। दो साल से एक पैसा भी नहीं बढाया है — दाल में कितना पानी डालें ?"

**व्हर्लपूल मजदूर :** " बैसाखी पर छुट्टी इस बार नहीं दी। मैनेजमेन्ट ने नोटिस लगाया कि बैसाखी की छुट्टी को दिवाली पर जोड़ देगी। वास्तव में मैनेजमेन्ट ने इस समय व्हर्लपूल में कार्य कर रहे 600-650 कैजुअल वरकरों की एक छुट्टी हड़प ली है। हर कैजुअल की 6 महीनों में ब्रेक कर देते हैं इसलिये इस समय वाले कैजुअलों की बैसाखी छुट्टी गई मैनेजमेन्ट के पेट में — दिवाली पर ऑफ-सीजन का समय होगा इसलिये तब कैजुअलों की सँख्या वैसे भी नाम मात्र की होगी। आजकल काम कर जोर है और कैजुअलों को अक्सर ओवर टाइम पर रोकते हैं। लेकिन कैजुअल वरकरों को ओवर टाइम की पेमेन्ट नहीं देते — कहते हैं कि बदले में छुट्टी ले लेना। और, बदले की छुट्टी भी नहीं तो भी उस महीने के ओवर टाइम के पैसे नहीं देते बल्कि 6 महीने पूरे होने पर ब्रेक करते हैं तब ओवर टाइम के पैसे देते हैं — डबल की बजाय सिंगल रेट से।

" सेक्युरिटी को ठेके पर देने के वक्त सेक्युरिटी स्टाफ पर इस्तीफों के लिये व्हर्लपूल मैनेजमेन्ट ने बहुत दबाव डाला था। अधिकतर पुराने फौजी थे और कईयों ने इस्तीफे देने से इनकार कर दिया था। इधर-उधर ट्रान्सफरों द्वारा परेशान कर अन्ततः मैनेजमेन्ट को पुराने गार्डों को उत्पादन कार्य में रखना पड़ा। पुराने फौजी काफी-कुछ भुगते हैं और अनुभवों से सीख कर उन्होंने अपनी टोलियाँ-सी बना ली हैं। इन फौजियों की टोलियों द्वारा साहबों पर लगाम लगाना मजेदार है — साहब लोग इन से बच कर रहते हैं।"

# मथ-मथ-मन्थन

**युवा मजदूर :** "मैं दुविधा में रहता हूँ: नौकरी भी बनी रहे और जो धन्धा शुरू किया है वह भी चलता रहे। नौकरी 2200 रुपये महीना की है और इससे गुजारा चलता नहीं। यही हाल धन्धे का है। न अकेली नौकरी से काम चलेगा और न अकेले धन्धे से.... उलझन में दिमाग खराब हो जाता है। कई दिन ड्युटी के लिये तो घर से चल देता हूँ पर मन में चलते द्वन्द्व के कारण आधे रास्ते से ही वापस लौट जाता हूँ। आज भी ऐसा ही हुआ।

"पहले मैं लाटरी का काम करता था। एक को नौकरी पर भी रखा हुआ था। लाटरी में मुझे 5 लाख रुपये का घाटा हो गया – ढाई लाख मैंने और ढाई लाख पिता जी ने दिये। बच्चे छोटे हैं। गुजारे वास्ते मैंने 2200 रुपये की नौकरी पकड़ी और पिताजी ने मुझे आटे की चक्की लगवा दी।

"सोचता था कि अपनी बिरादरी वाले के यहाँ नौकरी कर रहा हूँ पर जल्द ही मुझे समझ में आ गया कि साहब और मातहत की एक बिरादरी नहीं होती। मुझे कभी इस मशीन पर और कभी उस मशीन पर लगा देते हैं तथा दबा कर काम लेते हैं लेकिन मैं पैसे बढाने की कहता हूँ तो जंवाब होता है कि 2200 ही बहुत हैं।

"नौकरी की जलालत और धन्धे की दिक्कतों-परेशानियों से उठते तूफान दिमाग में तनाव पैदा करते हैं। सोचता हूँ कि पागल न हो जाऊँ। जिस आदमी के पास चार पैसे हो जाते हैं वह आसमान में देखने लगता है, यह तो दिखता ही नहीं कि पाँव कहाँ पड़ रहा है और कौन-कौन कुचले जा रहे हैं। जबकि, नँगे आये थे और नँगे ही जायेंगे। इन्सान का थोड़े में गुजारा कर लेना अच्छा है। लेकिन नाते-रिश्तेदारों, दोस्तों, पड़ोसियों की बातें व व्यवहार और परिवार..... हर एक को टूटने तक तान रहे हैं।" ■

## झलक पलट वार की

"गैस का प्रेशर बताने वाली घड़ियों को तोड़ते रहते हैं – सप्ताह में 5-6 तो तोड़ ही देते हैं। कोई भी घड़ी 2-3 दिन से ज्यादा नहीं चलती। गिरा कर तोड़ देते हैं – कोई नहीं कहता कि उसने घड़ी तोड़ी है। सब यही कहते हैं कि किसी और ने तोड़ी है, यह पता नहीं कि किसने। चाबी लगा कर गैस सिलेन्डर के नॉब को ढीला छोड़ देते हैं – गैस बरबाद होती रहती है, लगना है दो तो तीन सिलेन्डर लगते हैं। जब मौका मिलता है तब कोई न कोई किसी न किसी तार को खींच देता है – 2-4-6 घण्टे का ब्रेक हो जाता है। जब काम का लोड होता है तब छेड़छाड़ करते हैं क्योंकि तब भगायेंगे नहीं। आजकल काम ढीला है ऐसे में कोई छेड़छाड़ नहीं करते क्योंकि खतरा है कि ब्रेक कर देंगे अथवा हाफ डे कर देंगे या फिर लोहा ढुआयेंगे।"

## मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये :

✶ अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते।

✶ बाँटने के लिये सड़क पर खड़ा होना जरूरी नहीं है। दोस्तों को पढवाने के लिये जितनी प्रतियाँ चाहियें उतनी मजदूर लाइब्रेरी से हर महीने 10 तारीख के बाद ले जाइये।

✶ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये-पैसे की दिक्कत है।

महीने में एक बार छापते हैं और 5000 प्रतियाँ फ्री बाँटते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें और अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।


डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी,
एन.आई.टी. फरीदाबाद–121001


चर्चा-चिन्तन

# जिन्दगी के अर्थ

**एच.ई.डब्लू. मजदूर :** "फैक्ट्री डी एल एफ इन्डस्ट्रीयल एरिया में है। कम्पनी में काम नहीं है। काम न हो तो सब मजदूर सूख जाते हैं। लोगों की अक्ल भी सूख जाती है। क्या बात करें? क्या माँग करें? कोई बात नजर आती ही नहीं। मजदूर पागल से हो जाते हैं। किससे कहें? क्या कहें? जा कर बैठे रहते हैं। नौकरी खतरे में है। जब काम नहीं है तो कोई क्यों रखेगा?"

**रोलाटेनर्स वरकर :** "हर समय नौकरी जाने का खतरा बना रहता है। एक तरह से अगले दिन की गांरन्टी खत्म हो गई है। ऐसे ही चतला रहेगा या कोई समाधान भी है?"

**एस्कोर्ट्स मजदूर :** "फार्मट्रैक प्लान्ट में 2600 ट्रैक्टर प्रतिमाह का उत्पादन निर्धारित है लेकिन मैनेजमेन्ट ने अप्रेल का टारगेट 1000 ट्रैक्टर और मई का 750 ट्रैक्टर ही रखा है। पूरे एग्रो ग्रुप में मन्दा है – मण्डी में बिक्री ही नहीं है .... दो की बजाय एक शिफ्ट में ही मोटरसाइकिल असेम्बल हो रही हैं। पिछले साल एस्कोर्ट्स यामाहा घाटे में रही थी और अब भी घाटे में चल रही है .... फस्ट प्लान्ट में एक शिफ्ट में दोनों शिफ्टों के लोगों को बुला रहे हैं। लोग खाली रहते हैं। मैनेजर-सुपरवाइजर-वरकर, सब में एक डर है, 'यार कुछ पता नहीं, नौकरी का कुछ पक्का नहीं।'"

**इन्डीकेशन वरकर :** "काम कम हो गया है। हम असमंजस में हैं। मैनेजमेन्ट कुछ गड़बड़ करने की फिराक में लगती है। एक तरह से खतरे की घण्टी बज रही है। उत्पादन कम कर कम्पनी ने हमें तोड़ने का अच्छा तरीका अपनाया है।"

**झालानी टूल्स मजदूर :** "बिना तनखा काम कर लिया। पाँच साल से रिटायर हो रहे वरकरों को हिसाब के लिये चक्कर काटते देख रहे हैं। मृत मजदूरों की पत्नियों को हिसाब के लिये गेटों पर आते देख-देख सुन्न हो गये हैं। गुण्डागर्दी जो है सो है पर अधिक दिक्कत पड़ोसियों से है, परिवार से है जो अब भी ड्युटी जा रहे हैं। जानते हैं कि कम्पनी के वाइन्ड अप के आदेश हो चुके हैं और मैनेजमेन्ट की अपील भी खारिज हो गई है। सच्ची बात तो यह है कि अपने अन्दर ही उथल-पुथल है और ड्युटी के सिवा कुछ दिखता ही नहीं। इस उम्र में और कहीं ड्युटी मिलेगी नहीं और खाली तो बैठ सकते नहीं इसलिये फैक्ट्री चले जाते हैं। छुट-पुट काम हुआ तो कर लिया नहीं तो बैठ कर आ गये।"

हमारी जिन्दगियाँ किस कदर सिकुड़ गई हैं इसकी एक झलक उपरोक्त बातें प्रदान करती हैं।

**हम ऐसी समाज व्यवस्था में रह रहे हैं जहाँ उपयोगी होने का मतलब किसी मशीन का पुर्जा बनना है। मशीन का पुर्जा बनना तन को तानना और मन को मारना लिये होता है। लेकिन हमारी क्रियायें अधिकाधिक किसी मशीन का पुर्जा बनने अथवा बने रहने पर केन्द्रित होती जा रही हैं। फिर भी, मशीन के लिये कम उपयोगी बन जाने अथवा अनुपयोगी बन जाने के खतरे हर समय मंडराते रहते हैं। अपने से ऊपर वालों की नजरों में अपने भाव बढाने के लिये कितनी जलालत हम झेलते हैं। मशीन द्वारा छिटक दिये जाने, नौकरी से निकाल दिये जाने की बात हमारी जान सुखा देती है। नौकरी को, धन्धे को बनाये रखने के लिये अपने को और जलील करने की सलाहें देने में परिवारजन, नाते-रिश्तेदार, मित्र, पड़ोसी कोई कमी नहीं छोड़ते।**

**लेकिन कोई मशीन स्वयं कब अनुपयोगी हो जाये यह मँहगे ज्योतिषि और पहुँचे हुये सन्त-फकीर भी नहीं बता सकते।**

ऐसे में अपनी जिन्दगी को सिकोड़ते जाने वाली प्रक्रिया को थामने की जरूरत है। आइये जिन्दगी के अर्थ पर चर्चायें और चिन्तन-मनन करें।


स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए
जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स बी–546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।